

[illegible]

1.233


















































































निमोगुनूवनमास्वाकसिचिउथययूजाकंयथासतयायूजा
 अयरायकयारुनाय.यातासनयायचनेअलवाय.यूजा
 रलजायलयीसंययागुइउप्रागुमदुप्रागुमखप्रागु
 धूनिपूजाजैरैयौकितिनक.गलयागुविदुमासयूवनम.दुद
 यागुयूष्यनम.मयूप्रागुयूष्यनम.मैद्विद्वियागुयूष्यनम
 मयूपागुयूष्यनयूनिवचामितसकिननकशरुयन

गुग्गुलुदन्तदन्तकं गुग्गुलुदन्तवत्तु वियस्य स्यात्कयलवाजविस्
 जनयाय ॥ यन अजकासपिन्मक प्रयाय यो व द्वायकं ये
 पाउदक ये यो यो यो यो यो ॥ सिलक स्नान वाय ॥ वैत्राच नाय
 वजयूष्ययतिष्ठ स्वाहा ॥ अकाराय वजयूष्यं नमः स्वाहा तन्नसं
 राय वजयूष्यं यतिष्ठ स्वाहा ॥ अकाराय वजयूष्यं यतिष्ठ स्वाहा
 ॥ अकाराय वजयूष्यं यतिष्ठ स्वाहा ॥ सिवाहा यो नमः

न तू क मार्य थर्थ वृजा कि त न वि वादादा या क रू तू या क य व
अथ वा क ॥ उ न स वृद्धि ये क रू तौ सा सि त ह द या य पं मां
 त्मा स म वि त्रा य त्रु धा तु कं स तू ल य स त्वा तौ दू ड व कं रू का
 वृ ल्प दि वा ग ल्प ज हा य तौ उ व तु जं सां स वृ स हा ना नू ल
 त्रा यौ स म्प कं वौ धे व नि क्वा य त्रा य उं ॥ सु ग त व त्र तु य
 हं ॥ दा न व नं ज ज मा नं द ह्य वा द सि पि द ड धा ल ना र्थं त ह्

२ का क पि दू २

स्मे त्र क रेत रू र्थ य नि क्वा हा हा ॥ थ न या न वि वा त २ कू सा ल व न
का र्थी अ द्र वा क का यः नि स व स व ना रेत वं य त्री स नं स वृ नि द्वा
 मि श्र धा ॥ ज ड सि स ड व ड सि स न य त रा य कः सा ग स ज ध य हा
 न पि दू य त्रा स नं स वृ नि क्वा मि श्र धाः क म्प क थ र्थ का क पि दू सा न
पि दू ज ग र व ड पू जा या र कः थ न सा नं यौ न जिं नि वा त कू सा ल व न
 जी न क र्थी अ द्र वा क का र्थी कू सा ल व न रा य कः ॥ थ न उ व ल जि नि

[illegible]

च० वनसविन्दुं स प्र निष्ठा निष्ठ धा ॥ ५ ॥ स व न स मा ह्यः स व
 न स० नारि सं सिद्धं स व न स विन्दुं स प्र निष्ठा निष्ठ धा ॥ ६ ॥
 ऊर्ध्वं स मा स० ऊर्ध्वं स० नृन्दि सं सिद्धं ऊर्ध्वं स विन्दुं स य नि आत्
 धा ॥ ७ ॥ न डां स मा स० नृन्दि सं सिद्धं च० न डां स विन्दुं स
 यदि शा निष्ठ धा ॥ ८ ॥ द स० स मा स० द स मा स० स मा स० स मा स०
 स मा स० स मा स० स मा स० स मा स० स मा स० स मा स० स मा स० स मा स०

जिह्वा संसिद्धं च. उका दस पिन्दुं संपत्ति कामि सुधा ॥ ११ ॥
 द्वादस सासः द्वादस वाक सुथि लं चः द्वादस पिन्दुं संपत्ति
 कामि सुधा ॥ १२ ॥ *अथ न क सा कं थ भू य द्या धू स्य सिधका ॥ अ न*
कू सा ल य न य द्या न क न कं थ न य न पिन्दुं संपत्ति कामि सुधा
थ न द थ स कू सा ल य न य द्या न य कं ॥ अ न य न न न न न न न क का
 हं अ न य द्या वाक का स्य दू ज नि सा र ना थं सु ग मि वा नि का स
 ना थं पु न स हि न दू र्ध ना र ना थं पु न पिन्दुं संपत्ति कामि

सा धा ॥ *अथ न क सा कं थ भू य द्या धू स्य सिधका ॥ अ न*
 कू सा ल य न य द्या न क न कं थ न य न पिन्दुं संपत्ति कामि सुधा
 १ ॥ *अथ न क सा कं थ भू य द्या धू स्य सिधका ॥ अ न*
 कू सा ल य न य द्या न क न कं थ न य न पिन्दुं संपत्ति कामि सुधा
 २ ॥ *अथ न क सा कं थ भू य द्या धू स्य सिधका ॥ अ न*
 कू सा ल य न य द्या न क न कं थ न य न पिन्दुं संपत्ति कामि सुधा
 ३ ॥ *अथ न क सा कं थ भू य द्या धू स्य सिधका ॥ अ न*
 कू सा ल य न य द्या न क न कं थ न य न पिन्दुं संपत्ति कामि सुधा
 ४ ॥ *अथ न क सा कं थ भू य द्या धू स्य सिधका ॥ अ न*
 कू सा ल य न य द्या न क न कं थ न य न पिन्दुं संपत्ति कामि सुधा

मायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना ॥ ५ ॥ कस्मिन् विद्यादक
विद्यानवद्गुणननिदिनो मायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना
॥ ७ ॥ दिनकलु उत्पन्नं मायनार्थं वादसि विदुः स्व
प्ना ॥ ८ ॥ दूरवदूषयत्तस्य नाना नाना कस्मिन् वि
दुः दूरवमायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना ॥ ९ ॥ यत्
॥ ज्ञेयमूषयत्तनुदूषमायनार्थं वादसि वि

दं स्वप्ना ॥ १० ॥ सुचिमुखयत्तनुदूषमायनार्थं वादसि
विदुः स्वप्ना ॥ ११ ॥ दग्धनायातकतनुदूषमायनार्थं
वादसि विदुः स्वप्ना ॥ १२ ॥ कीमिकीनो उत्पन्नदूषमा
यनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना ॥ १३ ॥ तमायज्जकाररु
मिउपनमायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना ॥ १४ ॥ दूषमा
याज्जयंज्जमया र्गमादूरवमायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना

॥ १४ ॥ असि प्रवृत्त न यदुद्वेग मायु नार्थ वाद जयिदुं स
 स्तथा ॥ १५ ॥ अग्नि द्यत महान को लेद्वेग मायु नार्थ रम
 दसयिदं सि विदं श्वथा ॥ १६ ॥ यन क मा कं ~~व~~ व स वा लं
 पूजा ॥ वृन काडा ॥ कथू कया तनु ग स नं दु स ज ग व ज वा
 त स पू न स व पा खाना त स क्रा यि त न नो ज न न ति न क्रा
 स द यि व क स व न ति स र व न स सा हा ॥ ज ज मान या क्र

स न ति न कं ॥ यन वृ व ट म स ग श्व र वा व नि क ज य ति का स्वा
 क ॥ क मा कं थ न पूजा ॥ वृ न काडा क स वि या ड सा स्त्रि था य कं
 ॥ यन श्व पू ज ज शं नि स मा ल का स क स्या तं वि द थ य क री व
 न डा पू जा क मा क थ थ या या ॥ यन मू ल वि ड थ य क थ न वृ जा या
 य ॥ उ न ल हि ल का ड वि क ल वि ड थ य री ल ॥ वृ न का ड र व ज
 डा च ना सा ति न ना थ य वा य क ॥ यन मं नु यि ल कं स क स
 ना

सिध्दति जानमस्तु चउत्तरीय चिनामनिष्ठुज वल्लभान्ननसर्वस
त्वानासद्वाग्मायलियूरयनता नमस्तु नीस्त्री प्रायायकं प्रपूक
सद्ददकः चतुर्मास वेजरं ग्रं सत्वानां वावियायनं ६॥ सात्य
मानातथागीना नृणां दवाग्मा नृययः ४ वृषा पृष्ठा चदिया च
गं दविं नमास्तु नं ८॥ द्वालमश्चिना वल्लभं कृत्वा स
रुद्रकः ४ शुद्धाश्च वनिजान् द्वालवान्नमास्तु नं १०॥ वैका

मदिका दोथी नाश्च तत्ता सिद्धौ द्वाजयाश्च नः ४ मूदिना दो दस
यित्वा वाविस नानमास्तुय १॥ ८ रुद्रा नृदयुवा चंद्रां काला
कपालचतुदसं ४ अग्नि जाकल वायुश्च रुद्रा वियति नस्तु नं १२
॥ अन्ननस्तु जाजनं सतु नै नू जागत ४ वज्रच नृ वना म
दी ००० द्रुहो नृमूदा रुजनं १३॥ वज्रादात्म दस वृक्षात्म मनुज क
त्ययं नृ १३॥ तिजा दूयद नै मूकी कृ सल वनच मधूना सिका

वाहविनालालमण्ड्युतादनैकेदधियकमिजानुर्यातायन
 लसुपादयाअनदोसर्वज्ञायजायतवृधविज्जवान्॥काक
 विनुप्रदाननकाकसिधिरुना॥हानयिदप्रदाननप्रम
 माहाप्रयदसका॥प्रतसरिनभाचनाथायबादसविदंय
 कासया॥यनसकाकनवलयकाजाससकतामडाजअधवा
 नमजानुइयक॥गुरुदतसवहुयकेलिखचाकहसचा

रुना॥संरयंइइयै॥मौथननिसजाजअगंवाआयकेउ
 वग्यासदकनाभाह॥आयाचितपूजायोयसकस्याननियक
 दूषयनवानाउअसिवादनाडिकायसननाकयूयाउ
 आकासमालनयागविसजनयाचक॥किवालयूसअसकदल
 वलचायाजकावृत्तटसनाडिकाकेवलकावृत्तादजानन
 सकयजादिनका॥यनवृयमतदूयकनाहायसदइसंरय

गुजुदनामादि १

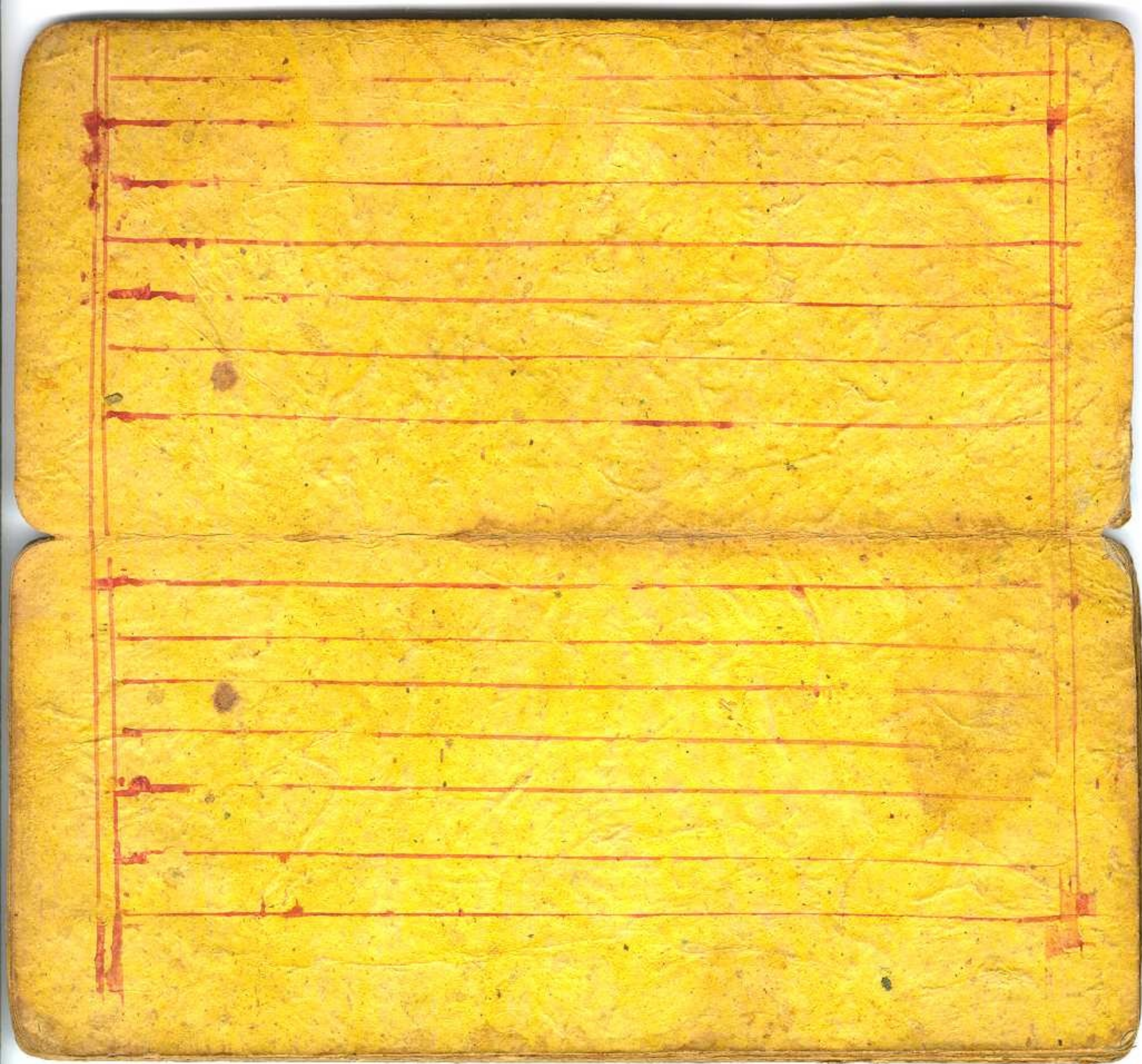
कृतं सत्तं वस्वत्तद्वयकृत्तुं शसं तनंद्वयकृत्तुं
राशनं सत्तं वस्वत्तद्वयकृत्तुं ॥ **जमानयाजं सत्तद्वय**
तद्वय ॥ सितं क॥ मा॥ ग्र॥ स॥ श्र॥ वे॥ य॥ पू॥ वा॥ मू॥ षं॥ द॥ कि॥ ना॥ मू॥ र॥ यं॥
य॥ कि॥ मा॥ मू॥ षं॥ उ॥ त॥ ना॥ मू॥ षं॥ अ॥ र्च॥ यो॥ ति॥ ऋ॥ ण॥ वे॥ ॥ ज॥ त॥ वा॥ न॥ य॥
गा॥ स॥ व॥ ता॥ क॥ ल॥ र॥ य॥ मा॥ य॥ न॥ वा॥ दा॥ श॥ वि॥ स॥ ज॥ न॥ यो॥ य॥ श॥ नो॥
वि॥ द्र॥ स॥ क॥ स॥ न॥ रु॥ का॥ स॥ या॥ अ॥ च॥ य॥ क॥ त॥ द्वा॥ य॥ श॥ सा॥ शु॥ रु॥ ॥

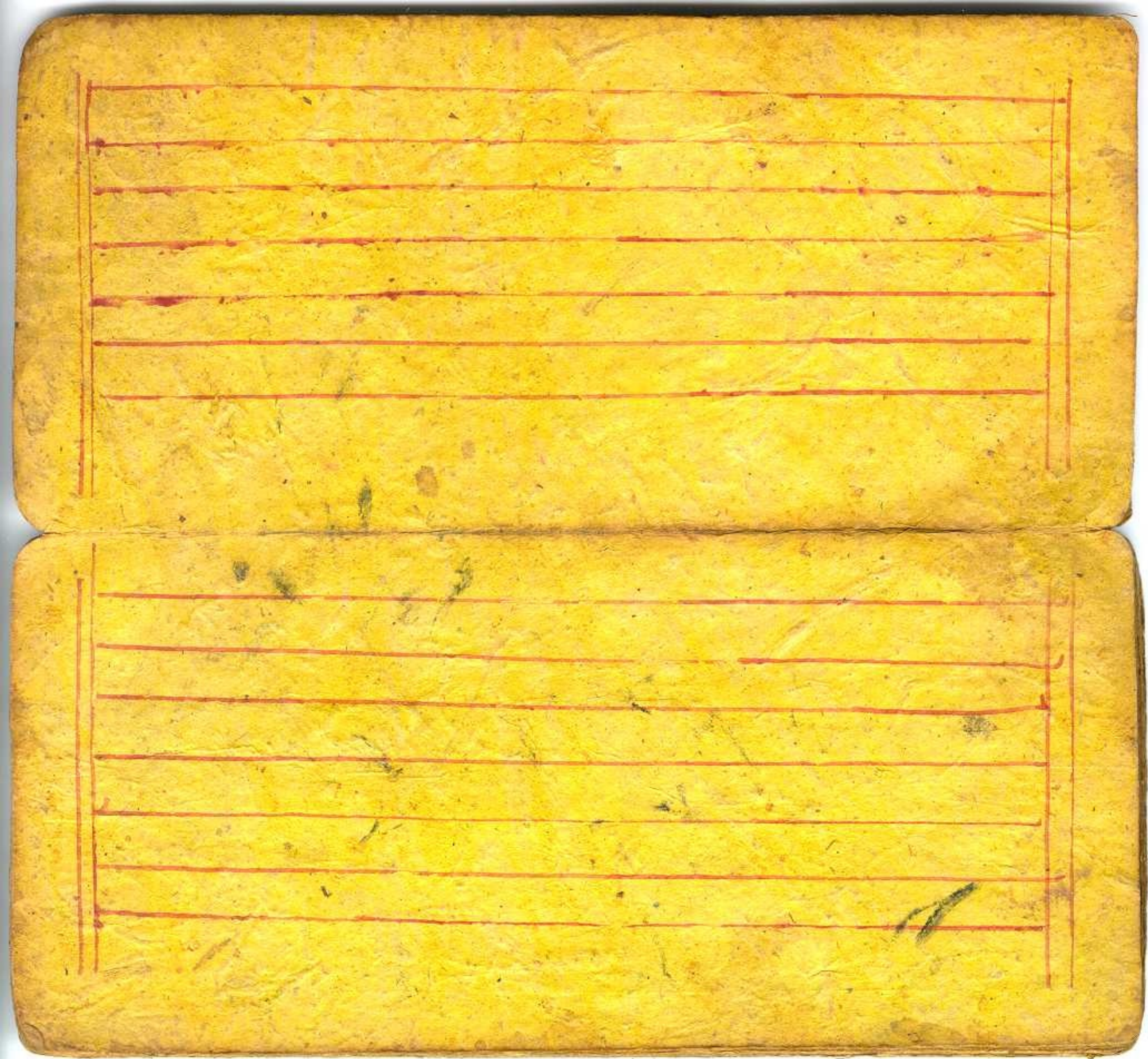


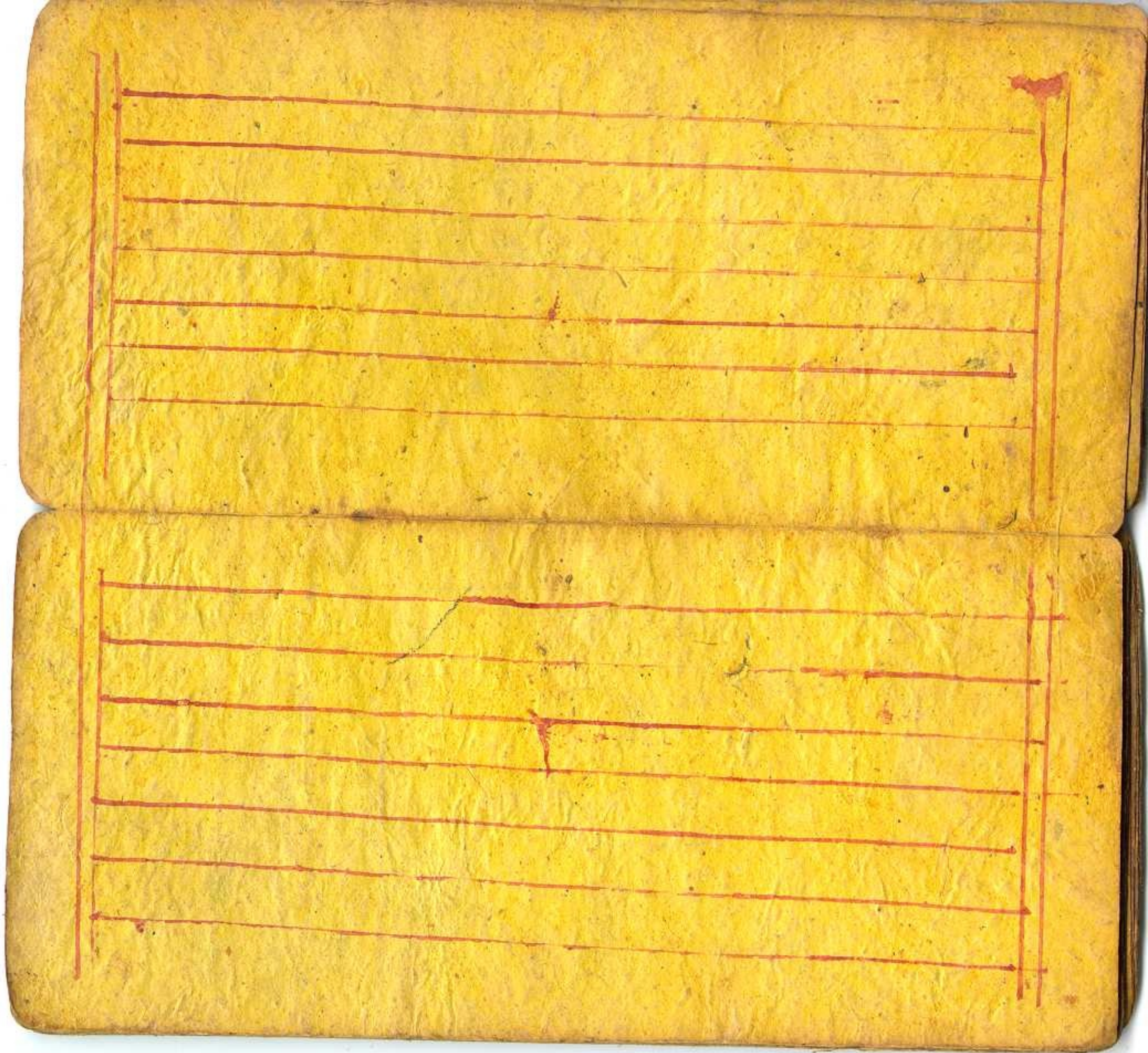
ASHA ARCHIVES

1.233

2012-2013











[illegible][illegible]

Handwritten text in Devanagari script, likely a religious or philosophical manuscript. The text is arranged in approximately 8 lines, with some lines starting with a double vertical bar (||) indicating a new section or verse. The script is fluid and characteristic of older Indian manuscripts.

Handwritten text in Devanagari script, continuing the manuscript. This section is separated from the previous one by a horizontal line. It begins with a double vertical bar (||) and contains several lines of text, including some that appear to be in a different script or dialect, possibly a mix of Sanskrit and a regional language. The text is written in a similar fluid style to the first page.

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript page. The text is written in black ink on aged paper and appears to be a religious or philosophical treatise. It consists of approximately 10 lines of text, with some lines starting with a small symbol resembling a stylized 'Om' or 'Aum'. The handwriting is clear and legible.

[illegible]